लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 3531

16 मार्च, 2020 को उत्तर के लिए

लौह अयस्क और तैयार लोहा

3531. डॉ॰ टी॰ सुमति(ए.) तामिझाची थंगापंडियनः

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) देश में सभी इस्पात संयंत्रों का लौह अयस्क और तैयार स्टील क्षेत्रों का कुल उत्पादन क्षमता, वास्तविक उत्पादन, उपभोग और निर्यात कितना है;

(ख) क्या देश में इस्पात संयंत्रों के लिए लौह अयस्क या कच्चे माल की आपूर्ति में कमी है;

(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इसके क्या कारण हैं तथा सरकार द्वारा स्टील उद्योग को और अधिक कुशल बनाने के लिए क्या कदम उठाए हैं;

(घ) क्या भारतीय इस्पात प्राधिकरण और राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड नए बाजार खोलने, बिक्री में वृद्धि करने और ग्राहक सेवाओं के उच्च मानकों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं; और

(ङ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इस संबंध में क्या कदम उठाए गए हैं तथा उक्त अवधि के दौरान उनके द्वारा किए गए प्रयासों के क्या परिणाम रहे हैं?

उत्तर

इस्पात मंत्री **(श्री धर्मेंद्र प्रधान)**

(क): देश में लौह अयस्क का कुल उत्पादन, निर्यात और अनुमानित खपत निम्नानुसार है:-

(मिलियन टन में)

वर्ष	उत्पादन	निर्यात	अनुमानित खपत
2018-19	207.7	16.2	159.94

(स्रोत: जेपीसी/आईबीएम)

देश में क्रूड इस्पात क्षमता, क्रूड इस्पात उत्पादन और तैयार इस्पात का कुल निर्यात और खपत निम्नानुसार है:

(मिलियन टन में)

वर्ष	क्रूड इस्पात क्षमता	क्रूड इस्पात उत्पादन	कुल तैयार इस्पात निर्यात	तैयार इस्पात की कुल खपत
2018-19	142.24	110.92	6.36	98.71

स्रोत: जेपीसी

(ख) और (ग): देश में लौह अयस्क का उत्पादन घरेलू इस्पात उद्योग द्वारा लौह अयस्क की वर्तमान माँग/खपत को पूरा करने के लिए पर्याप्त है। तथापि, कोकिंग कोयले की संपूर्ण माँग को घरेलू उत्पादन से

पूरा नहीं किया जाता है क्योंकि देश में उच्च गुणवत्ता वाले कोकिंग कोयले (लो-एश कोल) की उपलब्धता सीमित है और अतः कोकिंग कोयले के आयात के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

जहाँ तक कोकिंग कोयले का संबंध है, वर्ष 2018-19 के दौरान इस्पात उद्योग के लिए कोकिंग कोयले की कुल मांग 58.37 एमटी थी। इसमें से 51.83 एमटी को आयातों के माध्यम से पूरा किया गया, 1.6 एमटी भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) और कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) द्वारा उपलब्ध कराए गए और शेष सेल की निजी कोयला खदानों और टाटा स्टील द्वारा पूरा किया गया था।

(घ) और (ङ): **स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल)**: सेल मौजूदा और नए बाजारों के माध्यम से बिक्री को अधिकतम करने पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है। ग्राहक सेवाओं में सुधार लाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। वर्ष 2018-19 के दौरान बिक्री योग्य इस्पात की बिक्री 14.11 मिलियन टन थी। वर्तमान वित्त वर्ष 2019-20 में दिसंबर, 2019 तक बिक्री योग्य इस्पात की बिक्री करीब 10.7 मिलियन टन है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में लगभग 7.7% अधिक है। सेल ने रिइन्फोर्समेंट बार और पैरेलल फ्लेंज्ड स्ट्रक्चरल के नए ब्रांड, डिजिटल भुगतान प्रणाली, डोर डिलिवरी की शुरुआत तथा अपने संयंत्रों के आस-पास स्थानीय एमएसएमई को प्रोत्साहन आदि देने के जरिए ग्राहक सेवाओं में सुधार लाने के लिए प्रयास किए हैं।

सेल ने नए अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में विभिन्न उत्पादों का निर्यात भी किया है। निर्यात बाजारों के लिए उच्चतर ग्राहक संतुष्टि हेतु की गई कुछ पहलें इस प्रकार हैं:-

i. निर्यातों के लिए पारादीप बंदरगाह से परिचालन आरंभ करना।
ii. छोटे आकार के निर्यात ऑर्डर के लिए कंटेनराइज्ड शिपमेंट की संख्या में वृद्धि।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल): आरआईएनएल की नीतियाँ ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण इस्पात की आपूर्ति करते हुए इस्पात बाजार में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के प्रति निर्देशित है। ग्रामीण भारत में इस्पात की खपत को प्रोत्साहित/बढ़ाने के लिए ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आरआईएनएल के उत्पादों के उपयोग तथा सामुदायिक अवसंरचना में उनके लाभों को उजागर करने हेतु अग्र-सक्रिय अभियान चलाया जाता है।

आरआईएनएल विनिर्माण क्षेत्र में कार्यरत एसएसआईसी और एनएसआईसी सहित कई एमएसएमई इकाइयों को नियमित रूप से इस्पात की आपूर्ति करता है। इसके अलावा, आरआईएनएल के पास देशभर की इस्पात आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विनिर्माता, परियोजना ग्राहकों और खुदरा व्यापारियों का बड़ा नेटवर्क है। आरआईएनएल निर्यातों पर जोर दे रहा है।

आरआईएनएल मौजूदा प्रक्रिया और उत्पादों में सुधार लाने और नए उत्पादों को विकसित करने के लिए अपने ग्राहकों से नियमित आधार पर बातचीत करता है और उनकी फीडबैक और आवश्यकता की जानकारी लेता है।

****